INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

कुड़मालि काव्य में अलंकार योजना

राधिका महतो
शोधार्थी
कुड़माली विभाग
डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी
विश्वविद्यालय, राँची

अलंकार का स्वरूप :—

साहित्य में अलंकार का विशेष महत्त्व है। अलंकार शब्द का अर्थ है ''सज्जा'' सौंदर्य वृद्धि। यह काव्य की भाषा को सुन्दर और प्रभावशाली बनाता है। अलंकार के माध्यम से कवि अपनी भावनाओं को अधिक गहराई और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करता है। कुड़मालि काव्य—शास्त्र में अलंकार का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस प्रकार कुड़मालि काव्यशास्त्र की अभिव्यक्ति को सौंदर्य और प्रभाव प्रदान करने में अलंकारों की अहम् और अनुपम भूमिका रहा है।

अलंकार शब्द 'अलम् + कार' मिलकर बना है, इसमें से 'अलम्' का अर्थ है पर्याप्त या यथेष्ट, तथा 'कार' का अर्थ है काव्य को पर्याप्त शोभा बढ़ा देने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं। अतः जो भूषित, सुशोभित करें वह अलंकार कहलाता है। अलंकार शास्त्र की प्रथम काव्यशास्त्रीय परिभाषा आचार्य दण्डी की है —

''काव्यंशोभाकरान धर्मानलंकारान प्रचक्षते।''[1]

अर्थात काव्य के शब्द और अर्थ की शोभा बढ़ाने वाले धर्म को अलंकार कहते हैं। अलंकार का अर्थ है आभूषण या गहना। जिस प्रकार आभूषणों को धारण करने के पश्चात सुंदर रमणी का सौंदर्य बढ़ जाता है उसी प्रकार अलंकार कविता, कामिनी के सौंदर्य को बढ़ाते हैं। केशवदास के शब्द में —

जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुवरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न राजई, कविता, बनिता मित्त।।[2]

अलंकार की व्यूत्पत्ति दो प्रकार से मानी गयी है एक जो अलंकृत करता है वह अलंकार है और दूसरे जिसके द्वारा अलंकृत किया जाता है। इसलिए यह अलंकार है। अतः हम उस उक्ति को अलंकार कह सकते हैं जिससे काव्य में शोभा एवं रमणीयता उत्पन्न होती है। भोजराज ने कहा है — जिस प्रकार अंजन की कालिमा दीर्घ नेत्रों में शोभित होती है मुक्ताहार उन्नत और पीन पयोधर पर शोभा देता है, उसी प्रकार अलंकार की शोभा भी सुन्दर भावाभिव्यक्ति में सहायक होने पर होती है। इस तरह स्पष्ट है कि अलंकार रस भाव आदि के उत्कर्ष विधायक रूप गुण क्रिया आदि की अनुभूति की तीव्रता प्रदान करने वाले होते हैं। अग्निपुराण भी इसकी जिक्र किया गया है कि अलंकारों से रहित सरस्वती विधवा नारी के समान है —

''अलंकार रहिता विधवेव सरस्वती''[3]

भरत मुनि ने भी कहा है कि उपमा, रूपक, दीपक तथा यमक आदि अलंकार नाटक के लिए सहायक है। भामह, दण्डी, वामन आदि काव्यशास्त्रियों ने भी अलंकारों के महत्त्व को स्वीकार किया है। अलंकारों का महत्त्व इस बात से प्रतिपादित हो जाता है कि अलंकार सम्प्रदाय नाम से एक स्वतंत्र साहित्यिक सम्प्रदाय है।

भामह, दण्डी आदि आचार्यों ने भी अलंकारों की अनिवार्यता को खुल कर प्रतिपादित किया चाहे आगे चलकर ग्यारहवीं सदी में आचार्य मम्मट ने अलंकारों की अनिवार्यता को शिथिल कर दिया –

''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि''[4]

इसके पश्चात् 13वीं सदी में अलंकारवादी कवि जयदेव ने पुनः अलंकारों की अनिवार्यता पर बल दिया और कहा –

अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृति।
असौ न मन्यते कस्मादनलंकृति।।

अर्थात यदि कोई व्यक्ति अलंकार विहिन शब्द अर्थ को काव्य मानता है वह यह क्यों नहीं मान लेता कि आग भी शीतल होती है। रीति काल में पुनः एक बार फिर अलंकारों को गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त हुआ अपने आश्रयदाताओं को कविता के माध्यम से प्रभावित करने की होड़ सी लगभग लगने के कारण कविता अलंकारों के भार से दबने सी लगी थी।''[5]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के मतानुसार –

''भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव करने में कभी–कभी सहायक होने वाले अलंकार है।''[6]

कुड़मालि काव्यशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. पुलकेश्वर महतो के शब्द में – ''आसल माहान अलंकार (गहना) काइब–सासतर कर एसन एक धंचरेक धरम हेकेइक, जाकर चलने (व्यवहारे) काइब–साहितेक रूप निखराइ के अकर सउभा बढ़ाउएक। काइब सासतरेक एहे धरम के गहना (अलंकार) कहल जाइक्।''

अलंकार के भेद :–

शब्द और अर्थ, भाषा के दो प्रमुख अंग होते हैं। अतः काव्य में चमत्कार शाब्दिक अथवा अर्थगत होता है। कुड़मालि काव्यशास्त्र में अलंकारों की स्थिती अनुसार कुड़मालि विद्वान डॉ. पुलकेश्वर महतो ने अलंकार को मूल रूप से तीन प्रमुख भागों में बाँटा है –

1. साड़ा गहना (शब्दालंकार)
2. अरथअ/मानेक गहना (अर्थालंकार)
3. मेसासामा/ भजाइल गहना (उभयालंकार)

शब्दालंकार :–

जहाँ शब्द के विशिष्ट प्रयोग से काव्य में चमत्कार या सौंदर्य उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। शब्दालंकार में केवल शब्दगत चमत्कार होता है, इसलिए कहा जाता है कि जहाँ शब्द के कारण चमत्कार हो वहाँ शब्दालंकार होता है। यह शब्द प्रधान रहता है और यह भाषा के बाहरी सौंदर्य को बढ़ाता है जैसे –

उरुखे बाँधलि जुरा, लागाउअलि पान बिड़ा,
बिछाअलि झाड़ि सेजिआ,
जागि रहलि धनि रातिआ।
आजु रे आउअतअ कालिया।।[7]

यहाँ उरुखे, जुरा, बिड़ा, सेजिआ, कालिया आदि शब्द की व्यवहार से कुड़मालि गीत के यह पद में चमत्कार उत्पन्न किया गया है। अतः यह शब्दालंकार का उदाहरण है।

शब्दालंकार के प्रमुख तीन प्रमुख भेद है –

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार
3. श्लेष अलंकार।

1) अनुप्रास अलंकार (अनुपेरास गहना) :– 'अनुप्रास' शब्द का अर्थ है – 'अनु' अर्थात बार–बार या बारम्बार एवं 'प्रास' का अर्थ है 'पास–पास रखना' या समीप। जहाँ वर्ण या शब्दों को बारम्बार पास–पास रखा जाए वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। समान वर्णों या शब्द की आवृत्ति को अनुप्रास अलंकार कहते हैं। अनुप्रास अलंकार में एक ही प्रकार के वर्णों या शब्दों का बार–बार प्रयोग कर के चमत्कार उत्पन्न किया जाता है। अनुप्रास का अर्थ है रस के अनुकूल अक्षरों की रचना। जैसे –

1. सामअ सबद सुनि ।
   चमकि उठलि धनि ।। (भबअ पिता)
2. पापिंआ पुकारि पिआ,
   हुदकि उठत जिआ।

यहाँ 'स' वर्ण और 'प' वर्ण की आवृत्ति है, अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है। अनुप्रास अलंकार के बहुत सारे उपभेद है जैसे –

3. छेकानुप्रास, 2) वृत्यानुप्रास, 3) अन्त्यानुप्रास, 4) यमक, 5) श्लेष ।

1) छेकानुप्रास (छेकानुपेरास) :– 'छेक' का अर्थ है 'चतुर'। चतुर जनों को प्रिय होने के कारण इसे छेकानुप्रास कहते हैं। जहाँ किसी कविता के पद में एक वर्ण अथवा अनेक वर्णों की आवृत्ति एक ही क्रम केवल एक बार हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है। इसमें वर्णों का एक ही क्रम से प्रयोग होना चाहिए, जैसे –

i. ***हरि हेरि भेला हारा***
कुंजअ निकुंज सारा।

ii. भेंसअ भुसनअ, भेला अकारनअ।

यहाँ 'ह' एवं 'भ' वर्णों की आवृत्ति एक ही बार हुई है इसलिए यह छेकानुप्रास अलंकार है। कुड़मालि में इसे 'दहरि गहना' कहते हैं।

2) बिरतानुप्रास गहना (वृत्यानुप्रास) :–

जब एक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति एकाधिकबार किसी पद में एक निश्चित क्रम में होती है, वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार होता है। जैसे –

i. सखि, सुनि–सुनि हिआ सालतअ।
ii. मदन मोहन मन महि लेल जे।

यहाँ पहले चरण में 'स' की और दूसरे में 'म' वर्ण की अनेकबार आवृत्ति है, अतः यह वृत्यानुप्रास अलंकार है।

3) अनतानुपेरास गहना (अंतानुप्रास अलंकार) :– किसी कविता के पद के आखिरी चरण में किसी वर्ण समान रूप से रहती है, वहाँ अन्तानुप्रास अलंकार होता है। जैसे –

I. मुड़ काटा नन्देक बेटा, जनमे जनम खँटा।
II. पिरितेक रिति–निति
भाभि गुनि, निति–निति

यहाँ पहले पद के आखरी चरण में 'टा' और दूसरे पद में 'त' वर्ण को समान रूप से रखी गई है।

4) जिमकि गहना (यमक अलंकार) :–

जहाँ एक शब्द की दो या अधिक बार आवृत्ति हो, किन्तु उनके अर्थ भिन्न–भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार और कुड़मालि में 'जिमकि' गहना कहते हैं। जैसे –

दिम–दिन दीना करत मागनउआ।

यहाँ 'दिन' का अर्थ 'दिवस' एवं 'दीन' का अर्थ 'गरीब' है। अतः यह यमक अलंकार है।

5) सलेस गहना (श्लेष अलंकार) :–

जब एक शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो, लेकिन उसके दो या अधिक अर्थ निकलते हो, तब श्लेष अलंकार होता है। कुड़मालि भाषा में इसे 'लटकुआ गहना' कहते हैं। वैसे तो श्लेष का अर्थ है – मिला हुआ या चिपका हुआ। जैसे–

i) ***सपन सगुन देखि, हरखि उठलि सखि,***
दुति से कहतअ बतिआ, फरकि उठलि बाम आँखिआ।
आजु रे आउअतअ कालिया।।[6]

यहाँ 'सगुन' शब्द की दो दो अर्थ में लिया गया है। पहले सगुन मतलब 'शुभ' और दूसरा 'सगुन' का अर्थ है 'कृष्ण'। श्लेष दो प्रकार का है – i) एक मानिआ सलेस या 'अभंग श्लेष' एवं ii) ढइर मानिआ सलेस या 'सभंग श्लेष'।

एक मानिआ सलेस (अभंग श्लेष) :–

जहाँ शब्द को बिना तोड़े के उसमे से बहुत सारे अर्थ निकलता है, वहाँ अभंग श्लेष अलंकार एवं कुड़मालि में एक मानिआ सलेस कहा जाता है। जैसे–

'कातरे' घर–पर बाँसिआ
बाताउअतअ चिकन कालिया।।

यहाँ 'कातरे' शब्द में बहुत सारे अर्थ छुपा है, पहले अर्थ में 'क्यो' और दूसरे अर्थ में 'विरह कातर' को दिखाया गया है।

ढेइर मानिआ सलेस (सभंग श्लेष) :–

जहाँ किसी शब्द को तोड़कर उसमें से अलग–अलग अर्थ निकाला जाता है, वहाँ सभंग श्लेष होता है। कुड़मालि में इसे ढेइर मानिआ सलेस कहा जाता है। जैसे –

देखि डंगाघुरा कर घुरफेइर
घुरिफेरल डंगाघुरा।।[6]

यहाँ कुड़मालि शब्द डंगाघुरा के बहुत सारे अर्थ होती है, पहला अर्थ है कुड़मि विवाह के एक प्रमुख नेग–रिती और दूसरा 'डंगाघुरा' का अर्थ है नाव में घुम के आना। तीसरा अर्थ है जो नाव को चलाते हैं, मतलब 'माझि' या मल्लाह।

मानेक गहना (अर्थालंकार) :– जहाँ कथन विशेष में सौंदर्य अथवा चमत्कार विशिष्ट शब्द प्रयोग पर आश्रित न होकर अर्थ की विशिष्टता के कारण आया है, वहाँ अर्थालंकार होता है। जैसे–

पहाड़ निआर हाथि
हाँड़ि लेखे मुड़।

अर्थालंकार निम्नलिखित प्रकार के होते हैं –

जैसे उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, विरोधाभास, विभावना, प्रतीप, भ्रांतिमान, स्वभावोक्ति, लोकोक्ति अलंकार आदि।

उपमा गहना (उपमा अलंकार) :– उपमा का अर्थ है 'उप' अर्थात समीप से तथा 'मा' का अर्थ है तौलना या देखना अर्थात एक वस्तु के समीप दूसरी वस्तु को रखकर उनकी समानता या सादृश्य का प्रतिपादित करना। जहाँ समान गुणे धर्म या विशेषता के अनुसार एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से करके दोनों में समानता देखे जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है –

जेइसन पुरनिमाक चाँद करे झिकिमिकि गे।

तेइसन धनि सउभे चाँद मुख मुहतर गे।।[10]

रूपक अलंकार :– उपमेय में उपमान के निषेध रहित आरोप 'रूपक' कहलाते हैं। इसमें एक वस्तु पर दूसरी वस्तु इस प्रकार रखी जाती है कि भेद न मालूम पड़े। जैसे –

i) कलपअ तरु कउमल लउचन रिसिकेस।

ii) मुखअ पुरनअ ससि
अधरे मधुरअ हाँसि ।।

उत्प्रेक्षा अलंकार :– जहाँ उपमेय की उपमान के रूप में संभावना की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा का अर्थ है– उत् = बल पूर्वक + प्र = प्रधानता + ईक्षा = देखना अर्थात। अर्थात किसी उपमेय के लिए उपमान को बलपूर्वक प्रधानता देते हुए प्रस्तुत करना उत्प्रेक्षा होता है। उदाहरण –

i) सामअ बरन तनु
जेसन् उदित भानु।

अतिशयोक्ति :– जहाँ किसी वस्तु के गुण को इतना बड़ा–चढ़ा कर वर्णन किया जाए कि लोक सीमा का अतिक्रम होने लगे वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। कुड़मालि में इसे बेहिंसाबि गहना कहाजा तहै। जैसे–

तिरभुवन छानि–छानि
पिरितेक बिज आनि।
रपिके सिनचन करि,
देइ नइअनेक पानि।।[11]

विरोधाभास :– जहाँ वस्तुतः विरोध न रहने पर भी विरोध का वर्णन किया जाता है, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। जिसमें विरोध का आभास रहता है, अर्थात विरोध मालूम पड़ना। उदाहरण –

नदि नालाइ दुधेक धाराइं
बहेइक काजर पानि।

बिभाबना गहना (विभावना अलंकार) :– इसका अर्थ है विशेष कल्पना या विशिष्ट भावना। जब किसी काव्य या पंक्ति में कारण के न होने पर भी कार्य का होना पाया जाए, वहाँ विभावना अलंकार होता है। जैसे –

माइएक जनम निहि, संगे बेटा नाति
बापेक जनम निहि, केसे के उतपति।।

परतिप गहना (प्रतीप अलंकार) :– प्रतीप का अर्थ है – 'उल्टा' या 'विपरीत'। यह उपमा अलंकार के विपरीत होता है। क्योंकि इस अलंकार में उपमान को लज्जित, पराजित, या हीन दिखाकर उपमेय की श्रेष्ठता बताई जाती है। जैसे–

सुनिआ नूपुर ध्वनि
सिखिबारे से चलनि
मराल मिरनाल तेजि धाइ रे।[12]

भेरानतिमान गहना (भ्रांतिमान अलंकार) :– जब किसी वस्तु या पदार्थ को देखकर हम उसे उसके समान गुणों या विशेषताओं वाले किसी अन्य पदार्थ (उपमान) के रूप में मान लेते हैं तो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार माना जाता है। जैसे –

बन देखि हइ भरम
एइ विरिनदाबन,
सइलअ देखि हइ भरम

गिरि गबरधन ।।

स्वभावोक्ति अलंकार :– किसी पदार्थ अथवा वस्तु के स्वाभाविक वर्णन को स्वभावोक्ति अलंकार कहते हैं। उदाहरण :–

पगड़ि टेढ़ा फुलेते बेड़ा
बाँका बाँधि देला रे,
चाँचर चिकर बेनी छाड़ि देला रे ।।[13]

लोकोक्ति अलंकार :– जब किसी कविता या काव्य के पंक्ति में अपनी बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए किसी प्रसिद्ध लोकोक्ति (कहावत) का प्रयोग किया जाता है, तो वहाँ लोकोक्ति अलंकार होता है। यह काव्य की सुंदरता और अर्थ को और गहरा बना देता है। उदाहरण –

पहिल पिरिती काले
सरगेक चाँद हाँथे देले,
एबे हेले डुमरिका फुल,
केसे राखब कुल।।[14] ***(पुलक कवि) ।***

उभयालंकार :– काव्य में उभयालंकार काव्य सौंदर्य वृद्धि करने वाले वो आभूषण हैं, जो शब्द और अर्थ दोनों पर एक साथ आश्रित रहता है। जहाँ कुछ अलंकार केवल शब्दों की सुंदरता पर निर्भर करते हैं (शब्दालंकार) और कुछ केवल अर्थ की गहराई पर (अर्थालंकार), वहीं उभयालंकार में चमत्कार शब्द और अर्थ दोनों की वजह से उत्पन्न होता है। जैसे–

कामिनी कुंतलताला, सोहजाल महाजाल
बाझि गेला, बाझि गेला, गे धनि रसिक नागर
कि बाझि गेला।
देखाइए मधुर हास, लागलि पिरिति फाँस,
बाँधिदेलि, बाँधिदलि गे धनि चर समान
पासे बाँधि देलि।।[15]

यह कुड़मालि झुमरगीत में शब्द और अर्थ के मधुर संगम कर के इसमें अमत्कारी उत्पन्न किया गया है। अतः यह उभयालंकार का उदाहरण है। कुड़मालि भाषा में इसे भजाइल या मेसान अलंकार कहा जाता है।

संदर्भ संकेत

1. देवेन्द्र शर्मा, काव्य के तत्व, पृ. सं.– 56
2. डॉ. मधु खराटे, काव्यशास्त्र विविध आयाम, पृ. सं.– 164
3. अग्नि पुराण, अध्याय 16, 2 श्लोक – 135
4. आचार्य आनन्द वधनाचार्य – काव्य प्रकाश
5. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी – उत्तरभारत की संत परम्परा
6. डॉ. मधु खराटे, काव्यशास्त्र विविध आयाम, पृ. सं.– 163
7. किरिटी महतो श्रमिकसेन, नवनिर्वाचित झुमुर संग्रह, पृ.सं.– 105,
8. वही,
9. डॉ. एन. सी. केडुआर, 'साहितेक बिधान' – पृ. सं.– 188
10. पुलकेश्वर महतो (जुरुआर) आदित्य कुमार महतो – 'कुड़मालि साहित्य – संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास', पृ. सं.– 178।

11. डॉ. पि. के. महतो एवं राधिका महतो – 'कुड़मालिकाइब मिमांसा' पृ. सं.– 97.
12. डॉ. एच. एन. सिंह – 'कुरमाली साहित्य विविध संदर्भ', पृ. सं.– 192.
13. वही, पृ. सं. 192
14. डॉ. पि. के. महतो एवं राधिका महतो – 'कुड़मालि काइब मिमांसा' पृ. सं. 105
15. किरिटी महतो 'श्रमिक सेन' – 'नवनिर्वाचित झुमुर संग्रह' पृ. सं.– 105

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. खराटे डॉ. मधु – 'काव्यशास्त्र विविध आयाम' – विद्याप्रकाशन – 2016 – कानपूर – 22,
2. शर्मा प्रो. कृष्णदेव एवं अग्रवाल प्रो. सुरेश – 'रस छंद अलंकार' – अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली 110000, सन् (2000)
3. केशरी प्रसाद विसेश्वर – 'साहित्य के तत्व और आयाम' – नागपुरी संस्थान पिठोरिया राँची – 2007
4. सिंह, डॉ. एच. एन. – 'कुरमाली साहित्य के विविध आयाम' – कुरमाली भाषा परिषद् राँची, झारखण्ड, 2010
5. महतो (जुरुआर) पुलकेश्वर, महतो मुतरुआर कुमार आदित्या, – 'कुड़मालि साहित्य संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास', मानव प्रकाशन कोलकाता, 2021
6. महतो डॉ. पुलकेश्वर एवं महतो राधिका, – 'कुड़मालि काइब' मिमांसा, अप्रकाशित ;
7. भट्टाचार्य परेश चंद्र – 'छंद–मीमांसा व अलंकार समीक्षा' – भारती भवन – 2011, नई दिल्ली – 110002
8. महतो किरिटी, सेन् श्रमिक – 'नवनिर्वाचित झुमुर संग्रह', क्रिएटिव एसोसियेट कोलकाता 700049

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

R S E A R C H G A T E W A Y

A R O G Y A M O N L I N E

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM